UGC Care List ISSN 2347-2979

RNI No. 26030/73

संप्रेषण-179

साहित्य, कला एवं संस्कृति का सृजन संवाहक

- वर्ष : 59
- अंक : 179 (जनवरी-मार्च-2022)

प्रधान संपादक

चंद्रभानु भारद्वाज

संपर्क : संप्रेषण, 119, श्रीजी नगर, दुर्गापुरा, जयपुर-302018

अनुक्रम

क्र.सं.			
1.	जराय का मठ (बरुआ सागर)	दीपा सिंह	1–4
2.	मध्य पाषाण कालीन समाज का विस्तार-क्षेत्र व मानव व पर्यावरण सम्बन्ध	कंचन कुमारी	5–8
3.	निराला साहित्य में स्त्री	नेहा कुमारी	9–12
4.	मुक्तिबोध की कविता : मध्यवर्ग का ज्वलन्त दस्तावेज	डॉ. सौरभ सिंह विक्रम	13–16
5.	अरूणाचल प्रदेश के जनजातियों के त्योहार रीति-रिवाज एवं संस्कृति	डॉ. सत्य प्रकाश पाल डॉ. नरेन्द्र सिंह	17–23
6.	दूधनाथ सिंह की कहानियों में असफल प्रेम का यथार्थ	संजय कुमार सिंह	24–28
7.	An unpublished Serpent deity Sculptural Specimen from Khagaria district	Dr Anil Kumar	29–33
8.	Comparison of Positive Breath Holding Capacity Between Football And Handball Players	Dr. Subodh Singh	34–36
9.	इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में अभिव्यक्त स्त्री प्रतिरोध का स्वर	चन्दन शुक्ला	37–41
10.	कथाकार मन्नूभंडारी : व्यक्तित्व एवं रचना संसार	डॉ. प्राची सिंह	42–46
11.	प्राचीन मुद्राओं पर अंकित वस्त्र : एक अध्ययन	मनीषा	47–54

✷

प्राचीन मुद्राओं पर अंकित वस्त्र : एक अध्ययन

मनीषा

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, संतपुरा, यमुनानगर, हरियाणा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसके विकास की अपनी गाथा है। सामाजिक जीवन के अन्तर्गत वर्ण–व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, परिवार, विवाह, संस्कार, वेश–भूषा, खान–पान, मनोरंजन के साधन, दैनिक उपयोग की वस्तुएँ आदि का अध्ययन किया जाता है। यद्यपि प्राचीन मुद्राओं का आकार छोटा व उनकी उपलब्धता भी कम होती है इसलिए पूर्ण रूप से इसमें सामाजिक जीवन के बिन्दुओं पर प्रकाश नहीं डाला जा सकता है। अतएव मुद्राओं के आधार पर मात्र वस्त्र–विन्यास का अध्ययन किया जा सकता है। मुद्राओं पर जहाँ एक ओर राजा शाही पोशाक व सैनिक युद्ध से सम्बन्धित वस्त्र पहनते है वही महिलाएँ अपने वस्त्रों के साथ ही आभूषणों से भी सुसज्जित दृष्टिगत होती है।

वस्त्रों की आवश्यकता शीत–ताप निवारण एवं लज्जा आच्छादन के उद्देश्य से हुआ होगा और इसी में श्रृंगार की दृष्टि से इनका महत्व बढ़ता गया।[1] भारत में विदेशी आगमन के पूर्व पुरुषों में उण्णीश, उत्तरीय तथा अधोवास पहनने की प्रथा थी। इस अधोवास को बांधने के लिए कमर पर कटिबन्ध लगाया जाता था।[2] स्त्रियों में दुपट्टा व साड़ी (शटिका) पहनने की प्रथा थी।[3] भारत में लोग कपड़े की सिलाई से अपरचित नहीं थे।[4] किन्तु सिले हुए कपड़ों को पहनने की परम्परा का ज्ञान हमें शकों–कुषाणों के मध्य एशिया से भारत आगमन के बाद से होता है।[5] प्राचीन समय में हिन्द–यवन, शक–पह्लव, कुषाण आदि विदेशी जातियों के बहुतायत लोग जिनकी वेशभूषा अलग–अलग थी, वे भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में आकर बस गये थे। परिणामस्वरूप इन्होंने एक दूसरे के पोशाकों को प्रभावित किया तथा भारतीय वेश–भूषा में भी अपना धनात्मक योगदान दिया भारतीय भू–भाग का अधिकांश हिस्सा उष्णकटिबंधीय रहा है, अतएव गर्मी की अधिकता के कारण काफी सिले हुए वस्त्र की कभी बहुत आवश्यकता नहीं पड़ी होगी।

मुद्राओं से न केवल शासक–शासिकाओं के परिधानों की जानकारी मिलती है। अपितु विदेशी तथा भारतीय देवीं–देवताओं के उस युग में प्रचलित विदेशी एवं भारतीय परिधानों की भी सूचना प्राप्त होती है। जहाँ एक ओर भारतीय वस्त्रों में धोती, दुपट्टा, चादर, पगड़ी का अंकन प्राप्त होता है, वहीं दूसरी ओर विदेशी परिधान के रूप में चिटान (कन्चुक), हिमेशन, ईरानी कोट, नुकीली टोपी एवं जूतों का अंकन भी मुद्राओं पर दृष्टिगत होता है। अमरकोश[6] में उचित प्रकार से वस्त्र धारण किए जाने के महत्व के लिए 5 शब्दों को बतलाया गया है– अकल्प, विस, नपेथ्य, प्रतिकरम और प्रसाधन।

प्राचीन मुद्राओं में शासकों एवं देवताओं के वस्त्र :–

प्राचीन मुद्राओं के क्रम में शासकों एवं देवताओं को उत्तरीय, अधोवस्त्र एवं शिरोवेश धारण किये हुए विभिन्न प्रकार से अंकित किया गया है। जिसका विवरण निम्न है–

1. उत्तरीय (अन्तरवासस) :– शरीर पर कटि (कमर) से ऊपर के भाग को ढकने के लिए उपयोग किये गये वस्त्र को उत्तरीय कहते है। इन वस्त्रों में दुपट्टा, कन्चुक या कोट तथा चिटान इत्यादि को उर्ध्व वस्त्र के श्रेणी में रखा जाता है।

दुपट्टा :– प्राचीन समय से ही बड़ी मात्रा में पुरुष समाज में दुपट्टा (दुकूल) पहनने की प्रथा थी। इसको कंधे पर डालकर लटकाते थे, जिससे वक्ष का अधिकांश भाग ढक जाता था।

हिन्द–यवन शासकों में स्ट्रेटो– II की मुद्रा में अपोलो देवता तथा शक शासकों में वोनोनीज–स्पलहोर, वोनोनीज–स्पलगदम्, स्पलरिस–स्पलगदम्, एजिलाइजेज, एजेज–II की मुद्रा में हेराक्लिज को दुपट्टा लिये दर्शाया गया है। मुद्राओं पर इनका स्पष्ट अंकन कुछ स्थानों पर मिलता है तथा कुछ स्थानों पर अप्राप्त है। इस उत्तरीय को धारण करने की अलग–अलग शैली थी। कभी इससे दोनों कंधे ढके रहते तो कभी रेशमी[9] सूती इत्यादि रेशे (तन्तुओं) से बनाये जाते थे। गांधार की बुद्ध मूर्ति में भी इस प्रकार के चौड़े उत्तरीय का अंकन दिखाई पड़ता है।

2. **केन्चुक :–** यह आज की ही भांति कुर्तेनुमा लंबा वस्त्र होता था। इन मुद्राओं में कनिष्क – III, वासुदेव–मही[10], परवर्ती कुषाणों में गदहर, किदार, गदहर–समुद्र, गदहर–यसद, शक–साया, शक–सीता, शक–सना, शिलादा–भद्रा, शिलादा–बचरना, शिलादापाशना इत्यादि शासकों की मुद्राओं में राजा को कन्चुक पहनें दर्शाया गया है। इसकी बाहें ढीली तथा मुड़ी हुयी है। इसके गले के पास त्रिभुजाकार कटाव दिखाई पड़ता है। कन्चुक के किनारे स्टावर्का से बने होते थे। ये स्टावर्का एक प्रकार का मोटा कपड़ा होता था जो मोती एवं रत्नों से जड़ित था।[11] ये मोती जड़ित किनारा इन मुद्राओं पर देखा जा सकता है। मथुरा से प्राप्त एक योद्धा की मूर्ति[12] तथा आखेटकों द्वारा भी इस प्रकार के कन्चुक को पहनने का उल्लेख मिलता है।[13]
3. **कोट :–** प्राचीन भारतीय साहित्य में इसे 'वारवाण' कहा जाता था।[14] मुद्राओं पर कोट सदृश्य आकृति घुटनें तक लम्बी व चाकदार रूप में ज्ञात होती है, जिसके कोनें लटकते हुए प्रदर्शित है। यह परिधान मुख्य रूप से कुषाण शासकों का राजकीय परिधान बन गया था।

इन मुद्राओं में हिन्द–यवन शासक हरमेयस–कैलियोप, शकों में वोनोनीज–स्पलहोर, नोनानीज–स्पलगदम्, एजेज–एजिलाइजेज, एजिलाइजेज–एजेज II, गोण्डोफर्नीज–अस्पवर्मा, गोण्डोफर्नीज–सस की मुद्रा में कोट के कुछ अंश को देखा जा सकता है। इसमें शासक को अश्वारूढ़ योद्धा परिधान के अन्तर्गत कोट–धारण किये प्रदर्शित किया गया है। कनिष्क– III, वासुदेव–II की मुद्रा में, गुप्त शासक चन्द्रगुप्त कुमारदेवी[15] की मुद्रा में राजा को कोट पहनें दर्शाया गया है। कोट के गले, सामने एवं बीच में मोती एवं बहुमूल्य पत्थरों में जड़ित किये जाने के भी संकेत मिलते है।

4. **कॉलर** :– इन मुद्राओं में यूक्रेटाइडिज की हेलियोक्लिज–लाउडिके, हरमेपस–कैलियोप, कुषाण शासक कुजुल कैडफिसेस–हरमेयस की मुद्रा में शासकों के गले के पास कॉलर का अंकन दिखाई पड़ता है। मुद्राओं पर कॉलर का अंकन विदेशी शासकों के उन्नत वस्त्रों के सिलाई का द्योतक है। वर्तमान में बने वस्त्रों पर भी इस प्रकार का कॉलर बनाया जाता है।
5. **अधोवस्त्र (नीवी) :–** नीवी परिधान का उल्लेख विभिन्न ग्रन्थों में किया गया था। शरीर के नीचे धारण किये जाने वाले अधोवस्त्र के अन्तर्गत मुद्राओं पर हिमेशन, धोती, पायजामा, कमरबंद का अंकन किया गया है।

हिमेशन :– यह उत्तरीय (दुपट्टा) के ही समान एक लम्बी चौड़ी चादर होती थी। जिसे पुरुष वर्ग अपने शरीर पर अपनी आवश्यकतानुसार लपेट लेते थे। यह मुख्य रूप में यूनानी देवता जीयस[16] द्वारा धारण किये जाने वाला प्रमुख वस्त्र है। इन मुद्राओं के क्रम में हिन्द–यवन शासक अगाथाक्लिज–सिंकदर, शक–पह्लव शास वोनोनीज, स्पलहोर, वोनोनीज–स्पलगदम्, वोनोनीज–स्पलरिस, स्पलरिस–एजेज, मावेस–माकेनीज, एजिलाइजेज–एजेज–II, गोण्डोफर्नीज–अस्पवर्मा, गोण्डोफर्नीज–सस इत्यादि शासकों की मुद्राओं पर यूनानी देव जीयस को हिमेशन धारण किए हुए प्रदर्शित किया गया है। इसमें ''हिमेशन'' का एक सिरा कमर से लपेटा गया है तथा दूसरा सिरा आगे से बायें कंधे को ढकतें हुए हाथ के अन्दर गिराया गया है। हड्डा से प्राप्त एक परिवारिक मधुपान दृश्य में वृद्व पुरुष को कुछ इसी प्रकार हिमेशन धारण किये प्रदर्शित किया गया है।[17]

2. पायजामा :– अधोवस्त्र के रूप में पायजामा का पूर्ण रूप से अंकन कुषाण शासकों की मुद्राओं पर दृष्टिगत होता है। कनिष्क III, वासुदेव II, परवर्ती कुषाण। कबायली कुषाणों में गदहर–पिरोज, गदहर–किदार, गदहर–समुद्र, शक–साया, शक–सीता, शक–सना, शिलादा–भद्रा, शिलादा–बचरना शिलादा–पाशना, गुप्त शासक चन्द्रगुप्त–I व कुमारदेवी प्रकार की मुद्रा एवं यशस्कर वंशीय दिद्दा क्षेम

की मुद्रा में शासक को पायजामा पहनें दर्शाया गया है। कुषाण काल में भारत के उत्तर–पश्चिमी सीमा पर बसे मध्य एशियाई लोगों द्वारा अधोवस्त्र में धोती के स्थान पर पायजामा पहना जाता था। इन मुद्राओं में शासकों द्वारा पहनाया गया वस्त्र चूड़ीदार पायजामें के समान है। जिसमें छल्लेदार धारियाँ बनी है तथा सामने की ओर गांठदार अलंकरण भी किया गया है।

3. धोती :– भारतीयों द्वारा धारण किये जाने वाले प्रसिद्ध वस्त्र के रूप में धोती को जाना जाता है। मुख्य रूप से धोती दो रूपों में पहना जाता था–

- घुटनें तक धोती का अंकन
- कसी हुयी सिलवटदार एड़ी तक धोती का अंकन

अंकन शासकों की मुद्राओं पर भारतीय देवता शिव का अंकन किया गया है।[18] कनिष्क–III एवं वासुदेव–II की मुद्रा पर शिव को एड़ी तक की सकच्छ एवं चुन्नटदार धोती पहनें दर्शाया गया है, जिसमें धोती की सिलवटें दर्शनीय है। प्राचीन काल में भारतीय परम्परा में धोती का प्रचलन अभिजात्य वर्ग से लेकर सामान्य जन तक रहा होगा। उच्च स्तर के लोगों द्वारा एड़ी तक लटकती धोती तथा कामकाजी वर्ग के लोग घुटने के ऊपर उठी हुयी धोती पहनते थे। गांधार एवं मथुरा के मूर्तियों में इस प्रकार की वेशभूषा का अंकन किया गया है।[19] इसी प्रकार मथुरा के नागराज की मूर्ति में तत्कालीन धोती पहनने की शैली का सुन्दर उदाहरण ज्ञात होता है।[20]

4. कमरबन्द :– पुरुष वर्ग अपने वस्त्र को यथा–स्थान टिकाने के लिए कमरबन्द का उपयोग प्रायः करते थे। हिन्द–यवन, शक–पह्लव शासकों की मुद्राओं पर कमरबन्द का प्रयोग अधिकांशतः घुड़सवार युक्त शासकों द्वारा किया गया है। सैन्य वेशभूषा में शासकों द्वारा कमरपट्टी (बेल्ट) का प्रयोग मुख्य रूप से किया जाता था। ये कमर पट्टियाँ मोटे कपड़े या चमड़े द्वारा निर्मित की जाती थी। प्रायः इनके जोड़ जंजीरदार चौड़े या कोणीय पदक में हुक लगे हुए होते थे।

(C) शिरोवेश :– प्राचीन समय से ही लोगों द्वारा शिरोवेश धारण करने की परम्परा रही है। ये परम्परा मुद्राओं पर भी दिखाई पड़ती है। जिसमें समाज के लोगों द्वारा टोपी, पगड़ी, मुकुट, शिरस्त्राण आदि धारण किए दिखाया गया है। यद्यप्पि पगड़ी सामान्यजन टोपी विशिष्ट जन तथा शिरस्त्राण सैनिक (शासक) द्वारा पहनें जाने वाला शिरोवेश है। विदेशी शासकों एवं भारतीय शासकों की मुद्राओं में शासकों एवं देवताओं को विविध प्रकार के शिरोवेश धारण किये दर्शाया गया है।

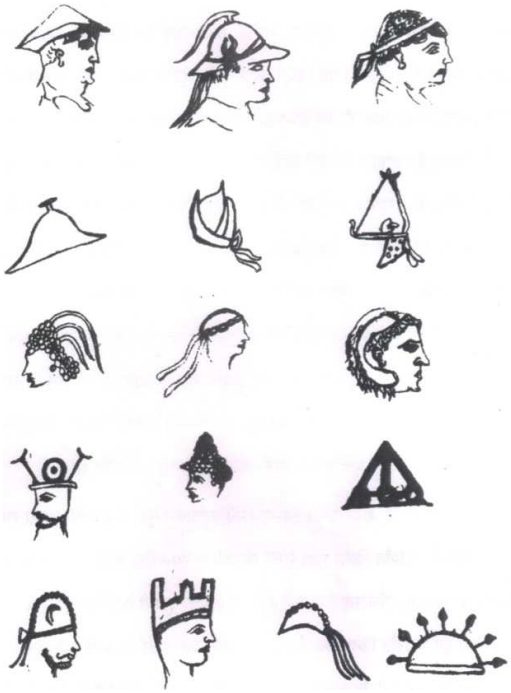

1. **हेलमेट** :– विभिन्न प्रकार के हेलमेट हिन्द–यवन, शक–पह्लव तथा गुप्त शासकों की मुद्राओं पर दृष्टिगत होते हैं। सामान्य सैनिक आम–तौर पर साधारण हेलमेट तथा अधिकारी वर्ग अलंकृत हेलमेट पहनें हुए दिखाई पड़ते हैं। बैल के कान और बैल के सींगो के समान आकृति को आम तौर पर सजावट के लिए इस्तेमाल किया जाता था।[21] इसको देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि इन्हें आंशिक रूप में ऊन तथा लोटे के जैसे किसी धातु से बनाया जाता था। मस्तक व गर्दन को ढँकने वाले हिस्से सम्भवतः धातु तथा बाकी हिस्से ऊन से बने होते थे। हिन्द यवन शासक यूक्रेटाइडिज की हरमेप–लाउडिके, अगाथाक्लिया–स्ट्रेटो I, हरमेयस–कैसियोप, शक–शासकों में वोनोनीज, स्पलहोर, वोनोनीज–स्पलगदम्, वोनोनीज–स्पलरिस, स्पलरिस–एजेज–I, एजेज–I, एजिलाइजेज, एजेज–II, इन्द्रवर्मा, एजेज–II, अस्पवर्मा की मुद्रा में शासक को हेलमेट पहनें दर्शाया गया है। एन्टिमेकस–डायोडोरस की मुद्रा में जीयस को हेलमेट पहनें अंकित किया गया है। हेलमेट के पीछे गाँठ के रूप में कभी–कभी रिबन भी बंधा होता था।
2. **ताज** :– हिन्द यवन, शक–पह्लव शासकों की बहुतायत मुद्रा में हेराक्लिज को ताज पहने प्रदर्शित किया गया है।[22] वोनोनीज–स्पलहोर, वोनोनीज–स्पलगदम्, स्पलरिस–स्पलगदम्, एजिलाइजेज–एजेज–II की मुद्रा में हेराक्लिज को ताज पहनें हुए प्रदर्शित किया गया है। ये ताज मोती जड़ित विविध रत्नों व आभूषणों से युक्त होते थे। अजन्ता[23] के चित्रकला में राजा और रानियों को विविध कीमतीं पत्थरों एवं रत्नों से बने ताज को पहने हुए चित्रित किया गया है।
3. **कुलाहनुमा टोपी** :– शक एवं कुषाण शासकों द्वारा ऊँची उठी हुयी तिकोनी आकार की टोपी पहनने का प्रचलन सर्वप्रथम उत्तर–पश्चिम भारत में आया। जिसे 'तिग्गाखौदा' या शकों की 'नुकीली टोप' या हिन्दी में 'कुलाह'[24] के नाम से जाना जाता है। यह दो कपड़ों को जोड़कर बनाया जाता है। जिसकी सिरों से लेकर सामने तक होती थी। हिन्द–यवन शासक लिमियस एवं 'एन्टियालकिड्स' की मुद्रा में डियास्कूरी को शंक्वाकार टोपी पहनें तथा कुषाण शासक कनिष्क–III की मुद्रा में शासक को इस प्रकार की टोपी धारण किये देखा जा सकता है।
4. **काउसिया टोपी** :– हिन्द–यवन शासक अगाथाक्लिया–स्ट्रेटा–I, स्ट्रेटो–I, स्ट्रेटो–II की मुद्रा में शासक को काउसिया टोपी पहनें दिखाया गया है। यह कम ऊँचाई का विशेष प्रकार का यूनानी टोपी होती थी।
5. **अर्धगोलाकार टोपी** :– एजिलाइजेज–एजेज–II की मुद्रा में जीयस को सम्भवतः मोटे ऊन से बने फूलदार अर्धगोलाकार टोपी पहनें अंकित किया गया है। कभी–कभी इन टोपियों के मध्य में ऊपर एक गोल पदक सी आकृति भी दिखाई दे रही है जिस पर मोंती जड़ित है।
6. **मौक्तिक जड़ित टोंपी** :– कुषाण शासक कनिष्क–III, वासुदेव–II, तथा परवर्ती कुषाण/कबायली कुषाण शासकों की मुद्राओं के पुरोभाग पर शासक को मौक्तिक जड़ित टोपी पहनें दर्शाया गया है। यह कभी गोलाकार तथा तिकोनी दोनों ही रूपों में दिखाई पड़ते है। इन पर स्पष्ट रूप से मोती जड़ित है। सम्भवतः इन टोपियों का प्रयोग राजाओं द्वारा ही किया जाता था जो इनके राजशाही पक्ष का भी प्रतीक माना जा सकता है।
7. **पगड़ी** :– गोण्डोफर्नीज–अर्थेग्नीज की मुद्रा पर शासक को पगड़ी पहनें दर्शाया गया है। यह सादे कपड़े की लम्बी चीर या पट्टी से बने होते थे जिसे सिर पर बालों के ऊपर लपेटा जाता था।
8. **किरीट (मुकुट)** :– यह सफेद पट्टियाँ है जो सिर को घेरे रहती है। हिन्द–यवन शासक एन्टिमेकस–डायोडोटस, एन्टिमेकस–यूथिडेमस–अगाथाक्लिज–डोयोडोटस, अगाथाक्लिज–यूथिडेमस, यूक्रकेटाइडिज के हेलियोक्लिज–लाउडिके, स्ट्रेटो–अगाथाक्लिया, हरमेयस–कैलियोप, पह्लव शासक अर्थेग्नीज–गोण्डोफर्नीज एवं गुद, अर्थेग्नीज–गुद, गोण्डोफर्नीज सिम्बल–सपेदन। सतवस्त्र, पकोरेस–सस, कुजुल कैडफिसेस–हरमेयस की मुद्राओं में शासकों को किरीट धारण कियें हुए अंकित किया गया है। जस्टिन के अनुसार 'ग्रेट अलेक्जेण्डर' ने इस प्रकार के सिरोवेश को पहननें की प्रथा शुरू की थी, पार्सिया के बहुत सारे शासक इस प्रकार के शिरोवेश को पहनते थे।[25] अलेक्जेंडर के उत्तराधिकारियों ने भी इस प्रकार

के पट्टीनुमा आकृति के रूप में होता था जो धातु या कपड़ों से बना होता था। जिसमें सिर के पीछे इसकी गाठ लटकती रहती थी।

9. **जूत** :– जूते का अंकन मुख्य रूप से कुषाण शासकों में कनिष्क–III, वासुदेव–II मही एवं परवर्ती कुषाण/कबायली कुषाण शासकों की मुद्रा पर दिखाई पड़ता है। ये बड़ी ऊँगली वाले जूते होते थे। मुद्राओं पर अंकित जूतों का समीकरण प्राकृत साहित्य[26] में उल्लेखित 'खपुस तथा खल्लक प्रकार' के जूतों से किया जा सकता है। मोतीचन्द्र के अनुसार 'खपुसा' सम्भवतः 'ईरानी बूट' था जिन्हें शक एवं कुषाण इस देश में लाये थे।

स्त्रियों एवं देवियों के वस्त्र :–

प्राचीन मुद्राओं में राजवंशों की मुद्राओं पर प्रायः सामान्य स्त्री का अंकन न होकर देवी व शासिका के रूप में वर्ग की महिलाओं के परिधानों के वस्त्र–विन्यास का पता नहीं चल पाता है। प्रमुख अंकनों में शसिका, देवी, आर्दोक्षो, लक्ष्मी के वस्त्र–विन्यास की विवेचना ही करना सम्भव हो पाया है।

(A) उत्तरीय वस्त्र (उर्ध्ववस्त्र) :– इन वस्त्रों के अन्तर्गत दुपट्टा (ओढ़ी), कन्चुक, चिटान, स्तनपट्ट/ब्लाऊज आदि का वर्णन मिलता है। जिनका विवरण निम्न है।

1. **दुपट्टा (ओढ़नी)** :– प्राचीन काल से ही भारत में बड़ी मात्रा में दुपट्टा (दुकून) बनाये जाने की प्रथा थी।[27] हिन्द–यवन शासकों में अगाथाक्लिया–स्ट्रेटो–I, स्ट्रेटा–I–स्ट्रेटो–II, शक–शासकों में वोनोनीज–स्पलगदम्, एजिलाइजेज–एजेज–II, एजेज–II, इन्द्रवर्मा, एजेज–II, अस्पवर्मा की मुद्रा में यूनानी देवी पल्लस व ऐथेना को धारित दुपट्टा या चादर ओढ़े हुए जिसमें एक छोर दाहिने कंधे को ठके हुए प्रदर्शित हैं।

जो सामने की ओर नीचे चला गया है तथा दूसरा छोर कंधे के बजाए बाजुओं से होकर सामने नीचे लटकते प्रदर्शित किया गया है। पल्लस द्वारा धारण दुपट्टे के छोरों पर किसी रत्न जड़ित अलंकरण का कार्य हुआ है। गुप्त शासक चन्द्रगुप्त–I व कुमार–देवी प्रकार की मुद्रा में पृष्ठ भाग पर अंकित देवी के कंधे चादर से ढके हैं।[28] कभी–कभी एक सिरा बायें कंधे को ढकता हुआ पीठ के पीछे गया ह। इसी मुद्रा के पुरोभाग पर रानी को दोनों कंधे चादर से ठके तथा कभी–कभी दोनों सिरे नीचे लटक रहे है। इस प्रकार से दुपट्टे की तुलना दिव्यावदान[29] में वर्णित 'स्वर्ण प्रवार' से की जा सकती है।

2. **कन्चुक** :– सामान्यतया स्त्रियों द्वारा वक्षस्थल के ऊपर पहना जाने वाला चुस्त तथा सिलवटेदार परिधान है। स्त्रियाँ प्रायः वक्ष स्थल को ढकने के लिए साड़ी के ऊपर या धोती एवं सलवार के साथ इसको पहनती थी। इनके प्रायः दो प्रकार ज्ञात होते थे।

- **घेरदार कन्चुक** :– अगाथाक्लिया–स्ट्रेटो–I, पह्लवों में अर्थेग्नीज–गोण्डोफर्नीज एवं गुद अथेग्नीज–गुद, गोण्डोफर्नीज–गुद, गोण्डोफर्नीज सिम्बल–सपेदन, गोण्डोफर्नीज सिम्बल–सत वस्त्र, पकोरेस–सस की मुद्राओं में नीके को घेरदार कन्चुक जिसका निचला भाग कमर तक ही है, पहनें दिखाया गया है। नीके ने इसे घेरदार साया, घाघरा या धोती के साथ पहना है। चन्द्रगुप्त–I व कुमारदेवी प्रकार की मुद्रा के पुरोभाग पर कुमारदेवी पूरी बाँह का घुटने तक लम्बा कन्चुक धारण किये हुए है। ऐसे ही मथुरा के कोण स्तम्भ पर यूनानी स्त्रियों के ऊपरी भाग पर टयूनिक (कन्चुक) तथा नीचे घेरदार साया पहनें प्रदर्शित किया गया है।[30]
- **कोटनुमा कन्चुक** :– यशस्कर वंशीय क्षेमगुप्त दिद्दा की मुद्रा पर सिंहासनारूढ़ देवी को (कोटनुमा कन्चुक) पहनें दिखलाया गया है। जो कभी खुला हुआ चुस्त घुटने तक तो कभी बंदनुमा अंकित है।

3. **चिटान** :– हिन्द–यवन, कुषाण, परवर्ती कुषाण/कबायली कुषाण, शासकों की मुद्राओं पर देवियों द्वारा धारण किए गए वस्त्रों के अवलोकन से ऐसा प्रतीत होता है कि इन क्षेत्रों में स्त्रियों के पहनावे में चिटान की अधिक लोकप्रियता थी। इनके ऊपरी हाथ का ब्लाऊज किसी गर्म वस्त्र द्वारा जबकि घेर किसी रेशमी वस्त्र या मोटे कपड़े द्वारा निर्मित होता था। अगाथाक्लिया–स्ट्रेटो–I की मुद्रा में अगाथाक्लिया को चिटान[31] पहनें कनिष्क–II, वासुदेव–II, मही, गदहर–किदार, गदहर–समुद्र की मुद्रा में देवी को चिटान धारण किये दर्शाया गया है। कुछ मुद्राओं पर आर्दोक्षों द्वारा धारण किए हुए चिटान का घेर पैर से अधिक लम्बा है जो जमीन पर अधिरोपित हो रहा है।

4. **स्तनपट्ट या ब्लाऊज :–** समाज में स्त्रियाँ प्राचीन काल से ही स्तनपट्ट का प्रयोग वक्ष को ढकने तथा स्थिर रखने के लिए कन्चुक के नीचे अथवा स्वतंत्र रूप से करती थी। कनिष्क – III, वासुदेव–I मही एवं परवर्ती कुषाण/कबायली की मुद्रा पर आर्दोक्षों को ब्लाऊज पहनें प्रदर्शित किया गया। चन्द्रगुप्त–I व कुमारदेवी प्रकार की मुद्रा के पुरोभाग पर अंकित कुमारदेवी को भी ब्लाऊन पहने प्रदर्शित किया गया है। इसमें स्तन पट्ट के दोनों सिरे स्तन को ढकते हुए पार्श्वो से पीछे पीठ की ओर जाते हुए अंकित है। ए0एस0 अल्तेकर के अनुसार कुषाणकालीन मथुरा एवं गांधार कला में स्त्रियों को ब्लाउज और फ्रॉक में प्रदर्शित किया गया हे।[32]

(B) अधोवस्त्र :– अधोवस्त्र में हिमेशन, धोती, साड़ी, पायजामा पर सलवार एवं कमरबंद का अंकन ज्ञात होता है। प्राचीन मुद्राओं पर इनका विवरण निम्न है।

1. **धोती :–** हिन्द–यवन शासक अगाथाक्लिया–स्ट्रेटो–स्ट्रेटो–स्ट्रेटो–II, शक शासक वीनोनीज–स्पलगदम्, एजिलाइजेज–एजेज, एजेज–II, इन्द्रवर्मा, एजेज–II, अस्पवर्मा की मुद्राओं पर यूनानी देवी पल्लस (एथेना) को चुल्लटदार धोती सदृश्य वस्त्र पहनें दर्शाया गया है। इसमें धोती का एक सिरा पीछे की ओर बांधा गया है तथा सामने की चुन्नट एड़ी तक लटकी हुयी है।
2. **साड़ी :–** साड़ प्रायः अधोवस्त्र के रूप में प्रयुक्त होने वाला स्त्री परिधान है। जो आधुनिक साड़ी के ही भांति मोटे या महीन रेशों से बने होते थे। कुषाण शासक कनिष्क–III, वासुदेव–II मही परवर्ती कुषाण शासकों/कबायली कुषाण शासकों में सिंहासनासीन आर्दोक्षो की एड़ी तक चुन्नटों से युक्त सुन्दर साड़ी पहनें दर्शाया गया है। उसमें सामने पड़ी चुन्नटे अत्यंत रोचक है। चन्द्रगुप्त कुमारदेवी प्रकार की मुद्रा पर अंकित कुमारदेवी 'स्कच्छ शैली' में साड़ी धारण किये हुए है। पुष्ठभाग पर अंकित देवी साड़ी को कमर में लपेटे हुए है। जिसमें साड़ी की चुन्नटों अथवा सिलवटों के छोर आगे को आकर्षक रूप से लटक रहे हैं। गांधार कला की मूर्तियों में स्त्रियों द्वारा पहनी गयी साड़ी की विभिन्न शैली दिखाई पड़ती है।[33]
3. **पायजामा :–** पायजामें की लम्बाई कमर से लेकर एड़ियों तक होती है। हिन्द–यवन व शक शासक एजेज–इन्द्रवर्मा, एजेज–अस्पवर्मा की मुद्रा में पल्लस को सलवार पहनें दिखलाया गया है। जिसमें इनके घुटने के ऊपर का भाग फूला हुआ सा प्रतीत होता है।
4. **घाघरा** :– आगाथाक्लिया – स्ट्रेटो, गोण्डोफर्नीज–गुद, आर्थेग्नीज–गुद, गोण्डोफर्नीज–गुद, पकोरेस–सस आदि शासकों की मुद्रा में नीके को घेरदार घाघरा पहनें हुए प्रदर्शित किया गया है। यशस्कर वंश में दिद्दा–क्षेम की मुद्रा पर भी देवी लक्ष्मी को कुछ इसी प्रकार घेरदार घाघरा पहनें दर्शाया गया है। इसका ऊपरी भाग चुनटदार होता है। कंकाली टीले के फलक व मोटा गाँव से प्राप्त स्त्री मूर्ति[34] पर स्कर्ट का अंकन दिखलाई पड़ता है।

इसके अतिरिक्त लबादा व गाउन सदृश्य वस्त्र का प्रयोग अगाथाक्लिया–स्ट्रेटो की मुद्रा में अगाथाक्लिया द्वारा धारण किया गया है सम्भवतः मुद्राओं पर आगाथाक्लिया के ऊपरी भाग को देखने से स्पष्ट होता है।

(C) **शिरोवेश :–**

1. **हेलमेट** :– हिन्द यवन शक शासकों की मुद्रा में जिन मुद्राओं पर पल्लस का सैन्य वेशभूषा में अंकन प्राप्त होता है। उसमें देवी पल्लस को हेलमेट धारण किए दर्शाया गया है।
2. **किरीट (टी आरा)** :– शक–पह्लव शासकों में माकेनीज–मावेस की मुद्रा में माकेनीज को टी आरा पहनें तथा एजिलाइजेज–एजेज–II व गोण्डोफर्नीज – सस की मुद्रा में जीयस को नीके लिये अंकन है जिसमें नीके को टी आरा पहनें दर्शाया गया है। इस टी आरा में तीन पतले पट्टे होते हैं। नीचे का पट्टा अपने ऊपर वाले हिस्से की तुलना में थोड़ा छोटा व शीर्ष व तीसरा पट्टा बीच के पट्टे की तुलना में थोड़ा छोटा व शीर्ष पर तीसरा पट्टा बीच के पट्टे की तुलना में थोड़ा बड़ा तथा अधिक सजावटी होता है। तीसरे पट्टे के केन्द्र में पंख का तना होता है व इसके ऊपर भी पंख होते थे। पट्टे के किनारे विभिन्न कीमती पत्थरों व मोती जड़ित रूप में सुसज्जित होते थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, राधवेन्द्र प्रताप; पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारत का सामाजिक इतिहास, पृ0 110–114
2. मार्शल एण्ड फ्रूशर, मान्यूमेन्ट ऑफ साँची, भाग–2, प्लेट 15,18
3. मुखर्जी, वतीन्द्र नाथ, मथुरा एण्ड इट्स सोसाइटी, पृ0 181
4. बाशम, आर्थर लेवलिन, द वन्डर देंट वॉज इण्डिया, पृ0 212
5. मोतीचन्द्र, भारतीय वेशभूषा, पृ0 210
6. चक्रवर्ती, स्वाती, सोशिया, रिलिजस एण्ड कल्चर स्टडी ऑफ द एन्शियन्ट इण्डियन क्वायन्स, पृ0 199
7. रॉव, वी0पी0एस0, आन ए रेयर सिल्वर ट्रेटा–दुख्म ऑफ वोनोनीज, जे0एन0एस0आई0, भाग–XIIV, पृ0 37–38
8. मोतीचन्द्र, भारतीय वेशभूषा, पृ0 29
9. महावग्ग, 8/1/36
10. COININDIA.Com (VASUDEVA II THE COIN INDIA COIN GALLERIES)
11. जेफरी, आर, वाक्यूब्यूलरी ऑफ फॉरेन वर्ड्स इन कूरान, उद्धत बयाना होर्ड कैटलाग, पृ0 सी0एल0 III
12. मोतीचन्द्र, भारतीय वेशभूषा, पृ0 16
13. अग्रवाल, वासुदेव शरण; राजघाट टेराकोटाज, जनरल ऑफ द इण्डियन सोसायटी ऑफ ओरियन्टल आर्ट खण्ड 9, 1941, पृ0 10, फलक 2, आ0 4
14. गिरी, कमल, भारतीय श्रृंगार, पृ0 133–142
15. COINS OF GUPTA DYNASTY/GOLDEN AGE OF INDIA LAKDIVA, NET
16. बनर्जी, जितेन्द्र नाथ, द डवलपमेंट ऑफ हिन्दू आइकनोग्राफी, पृ0 148–150
17. मार्शल, जॉन; बुद्धिस्ट आर्ट ऑफ गांधार XXVII 40, प्लेट XXXI, 40
18. बनर्जी, जितेन्द्र नाथ; द डवलपमेंट ऑफ हिन्दू आइकनोग्राफी, पृ0 148–150
19. श्रीवास्तव, रानी; कुषाण प्रस्तर मूर्तियों में समाज एवं धर्म, पृ0 57
20. मोतीचन्द्र; भारतीय वेशभूषा, पृ0 271
21. ब्रिटिश म्यूजियम कैटलॉग, पृ0 14, प्लेट V 7
22. पंजाब म्यूजियम कैटलॉग, पृ0 09, प्लेट–I, 1–2,9,18
23. ग्रीफित्स, पेन्टिंग्स इन द बुद्धिस्ट केव टैम्पल ऑफ अजन्ता, फोटो सं0 54,55,60,64,69,71,73,75
24. मणि, बुद्ध रश्मि; द कुषाण सिविलाइजेशन, पृ0 86
25. स्मिथ, डिक्शनरी ऑफ ग्रीक एण्ड रोमन एन्टिक्यूटीज, पृ0 395
26. बृहतकल्पसूत्र भाष्य, 4,3,8,4,7
27. वर्मा, मोहनी; ड्रेस एण्ड आर्नामेण्ट्स इन एन्शियंट इण्डिया, पृ0 60
28. विद्याप्रकाश, जे0एन0एस0आई0, भाग–XXII, पृ0 269
29. दिव्यावदान, पृ0 316
30. श्रीवास्तव, रानी; कुषाण प्रस्तर मूर्तियों में समाज एवं धर्म, पृ0 77

31. ब्रिटिश म्यूजियम कैटलॉग, XXVII, 10,14
32. अल्तेकर, अंनत सदशिव; पोजिशन ऑफ वोमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, पृ0 294
33. फूसे, ए0; ए आर्ट ग्रीको–बुधीक टु गन्धार, पेरिस, भाग–2, पृ0 318–319
34. श्रीवास्तव रानी; कुषाण प्रस्तर मूर्तियों में समाज एवं धर्म, पृ0 71